वंशस्थ छन्द

वंशस्थ छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

वंशस्थ छन्द का लक्षण-

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण तथा रगण आयें, उसे वंशस्थ छन्द कहा जाता है।

उदाहरण-

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः।।

अन्य उदाहरण-

इदं किलव्याजमनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।

ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां क्षेत्तुमृषिर्व्यवस्यति।।

विशेष-

क) इस छन्द के प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं।

ख) चरणान्त में यति होती है।

ग) छन्द का स्वरूप इस प्रकार का है-

।ऽ। ऽऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

Dhananjay Vasudeo Dwivedi